

पाठ नं० 1

भजन पूजन

रवींद्रनाथ ठाकुर

शब्दार्थ :-

- ① साधन - उपाय, पूजा - सामग्री
- ② आराधना - पूजा - उपासना
- ③ द्वार - दरवाजा
- ④ देवालय - मंदिर
- ⑤ मन के अंधकार से - अज्ञानता से
- ⑥ भजन - दुना हुआ, खोया हुआ
- ⑦ धूप - बरसात से एक समान होना - सुख - दुख से एक समान होना
- ⑧ परिधान - वस्त्र
- ⑨ मुक्ति - छुटकारा, मोक्ष
- ⑩ सृष्टि बंध - रचना - कार्य से लगे
- ⑪ धूल - धूसरित होना - धूल मिट्टी की परवाह न करके काम में लग गे
- ⑫ पसीना बहाना - कड़ी मेहनत करना

* मीमांसक :-

प्रश्न-1. इस कविता की रचना किसने की है।
उत्तर इस कविता की रचना गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने की है।

प्रश्न-2. यह कविता की रचना अन्य प्रार्थना - गीतों से किस प्रकार भिन्न है।

उत्तर इस कविता के माध्यम से कवि ने कर्म द्वारा

6/4/19
C.W

भगवान को पूजा करने को कहा है।
अतः यह कविता अन्य प्रार्थना गीत में
अलग है।

प्रश्न-8 कवि पुजारी से क्या अपेक्षा करता है?

उत्तर कवि पुजारी से अपेक्षा करता
है कि वह देवालय से बाहर निकलकर
मजदूरों के साथ कर्म करे।

* लिखित

प्रश्न-1 कवि ने पुजारी से भजन-पूजन छोड़ने की बात क्यों
कही है।

उत्तर कवि पुजारी से कह रहे हैं कि वह भजन-पूजन
छोड़कर कर्मों से लग जाए, क्योंकि भगवान
हमें कर्म करने को कहते हैं।

प्रश्न-2 कवि पुजारी से आँखें खोलकर देखने के लिए क्यों
कहता है?

उत्तर पुजारी को कर्म का ज्ञान नहीं है। वह आँख
बंद कर भाग्य के भूरो से बैठा है। इसलिए कवि
पुजारी को आँखें खोलकर देखने को कहता
है ताकि उसे कर्मों का ज्ञान हो सके।

प्रश्न-3 तैरा देवता वही चला राख है? पंक्ति से कवि का क्या
आश्रय है?

उत्तर इस पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाहता

है कि जहाँ कर्म है वही भगवान का निवास है।

प्रश्न 4. कविता में किसान और मजदूरों के बारे में क्या कहा गया है।

उत्तर कविता में मजदूरों के बारे में कहा गया है कि वे दिन रात पत्थर तोड़कर रास्ता तैयार करते हैं और धूप - बरसात के दुख को झेलते रहते हैं।

प्रश्न 5. 'सुकृति' के प्रश्न पर कवि क्या बात समझाता है?

उत्तर 'सुकृति' के संबंध में कवि का कहना है कि मेहनत - मजदूरी करने से ही ईश्वर मनुष्य को सुकृति प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न 6. कवि पूजारी से क्या करने को आग्रह कर रहा है।

उत्तर प्रस्तुत कविता में कवि पूजारी से निम्नलिखित आग्रह कर रहे हैं:-

- (i) भजन, पुजन, साधन आराधना सबको त्याग दो।
- (ii) मन से छाप दुःख अंधकार को दूर करो।
- (iii) परिश्रम के साधन को प्राप्त करो।
- (iv) पसीना बहने दो। इस प्रकार तुम्हारी सुकृति हो जाएगी।

प्रश्न 7. कविता का मूल सन्निपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि किसानों की दम कर्म के वास्तविक अर्थ को समझाया है। पूजारी ने माध्यम से कवि दम व्यर्थ में बहने से मना कर रहे हैं। माध्यम के जरूरी बहने को उन्होंने अंधकार बताया है। मन

Date : / /

के अंधकार को छोड़कर कवी हमें परिश्रम
द्वारा पसीना लुहाने को कह रहे हैं। कवि हमें
कवि का मानना है कि भगवान उसी का साथ
देते हैं जो परिश्रम करता है। और बहुत झेलते
हैं। अतः कवि से परिश्रम द्वारा ही भगवान
की पूजा करने को कह रहे हैं।

ज
04/05/17